**श्री अनुराग सिंह ठाकुर:** ऐसा करने से हिन्दू धर्मार्थी मथुरा-वृन्दावन एवं शिरडी सुविधाजनक रूप से जा सकते हैं। ...*(व्यवधान)*

MR. DEPUTY SPEAKER: Shri Mistry, please sit down.

...*(Interruptions)*

**श्री अनुराग सिंह ठाकुर:** सिख तीर्थयात्री आनन्दपुर साहिब, जहां खालसा पंथ की नींव रखी गई थी, वहां से सुविधाजनक रूप से दर्शनार्थ आ सकते हैं। इससे डिफेंस पर्सोनेल को आर्मी हैडक्वार्टर आने-जाने, दिल्ली, अम्बाला कैंट, मथुरा, आगरा कैंट, ग्वालियर, झांसी, भोपाल, मनमाड और औरंगाबाद आने-जाने में बहुत सुविधा होगी। ...*(व्यवधान)*

MR. DEPUTY SPEAKER: Silence please. Please sit down.

...*(Interruptions)*

**श्री अनुराग सिंह ठाकुर:** अन्त में मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि ये जो पांच ट्रेनों के नाम मैंने गिनाये हैं ...*(व्यवधान)*

**उपाध्यक्ष महोदय:** मिस्त्री जी, आप बैठ जायें।

**श्री अनुराग सिंह ठाकुर:** उनकी सुविधा शीघ्र उपलब्ध कराई जाये। ताकि वृद्ध महिलाओं और बच्चों को शौचालय जाने की सुविधाएं सभी ट्रेनों में उपलब्ध हों। इसके अलावा जो नंगल से दिल्ली जाने वाली जनशताब्दी ट्रेन है, उसको ऊना से चलाया जाए, ऐसा मेरा आपसे आग्रह है। धन्यवाद। ...*(व्यवधान)*

**उपाध्यक्ष महोदय:** आप बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)*

DR. SUJAN CHAKRABORTY (Jadavpur): Sir, please explain about it to me. ...*(Interruptions)*

**उपाध्यक्ष महोदय:** अगर आपने इसी तरह शोर किया, तो मैं जीरो ऑवर नहीं ले सकूंगा।

...*(व्यवधान)*

DR. SUJAN CHAKRABORTY: Sir, this is bulldozing. ...*(Interruptions)*

**उपाध्यक्ष महोदय:** अगर आपको जीरो ऑवर लेना है, तो शांत रहें। जो कुछ मैंने किया है उसके लिए हाउस की पहली परमीशन ली, उसके बाद मैंने बिल को पास कराया। ...*(व्यवधान)*

MR. DEPUTY SPEAKER: You did not utter a single word when I asked for the sense of the House.

...*(Interruptions)*

**उपाध्यक्ष महोदय:** आपको जीरो ऑवर लेना है या नहीं?

...*(व्यवधान)*

MR. DEPUTY SPEAKER: Please sit down.

...*(Interruptions)*

DR. SUJAN CHAKRABORTY: You are not going to discuss many of the issues. Why is it so? ...*(Interruptions)* The question is very simple. ...*(Interruptions)* I would have supported it, and I would not have objected to it. ...*(Interruptions)* Does the Parliament not have the right to discuss it? ...*(Interruptions)* This is my question. ...*(Interruptions)*

MR. DEPUTY SPEAKER: Nothing should be recorded.

...*(Interruptions)**

DR. SUJAN CHAKRABORTY: Have you not done anything wrong in this? ...*(Interruptions)*

MR. DEPUTY SPEAKER: Please sit down.

...*(Interruptions)*

MR. DEPUTY SPEAKER: I have not done anything wrong. I have got the sense of the House, and then I have decided to take up that Bill.

...*(Interruptions)*

DR. SUJAN CHAKRABORTY: Do you have any explanation to yourself? ...*(Interruptions)* You do not have any explanation to yourself also. ...*(Interruptions)*

**श्री बची सिंह रावत 'बचदा'** (अल्मोड़ा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो विधेयक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के संबंध में प्रस्तुत हुआ है, इसमें केन्द्र सरकार ने उत्तराखंड के गढ़वाल डिवीजन में स्थित हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा देने का निर्णय लिया है और उसका विधेयक भी प्रस्तुत हुआ है, इसका स्वागत है।

---

*Not recorded.

उत्तराखण्ड राज्य दो डिवीजन को मिलकर बना है। एक कुमायूं और एक गढ़वाल डिवीजन है। पर्वतीय भू-भाग होने की वजह से दोनों के बीच बहुत ज्यादा दूरियां हैं। पहले जब सन् 1970-71 में यह स्वीकृति दी गयी, तब एक ही विश्वविद्यालय उत्तराखंड विश्वविद्यालय के नाम से था, परंतु भौगोलिक विषमता और जनता के आंदोलन के कारण सन् 1973 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दो विश्वविद्यालय बनाए गए, एक कुमायूं विश्वविद्यालय और दूसरा हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय।

महोदय, कुमायूं डिवीजन में छः जिले हैं। अभी पूरी उच्च शिक्षा का दायित्व कुमायूं विश्वविद्यालय पर है और गढ़वाल के सात जनपदों का हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय पर है। अभी जो विश्वविद्यालय विधेयक पेश हुआ है, इसमें जो जूरिस्डिक्शन आफ यूनिवर्सिटीज जो दिया गया है, उसमें उसका जुरिस्डिक्शन गढ़वाल डिवीजन के सात जिलों तक ही है, जबकि उत्तराखंड के शेष छः जिले कुमायूं डिवीजन के भीतर हैं। दोनों विश्वविद्यालयों को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा देने की मांग राज्य सरकार व विश्वविद्यालय प्रशासन और वहां की जनता के द्वारा लंबे समय से की जा रही है और दोनों विश्वविद्यालय केन्द्रोय विश्वविद्यालय के मानक भी पूरा करते हैं। उत्तर प्रदेश राज्य में इस समय चार केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं और पूर्वोत्तर में छः केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं, अतः उत्तराखंड के कुमायूं विश्वविद्यालय को भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिये जाने की मांग करता हूं ताकि कुमायूं क्षेत्र में भी उच्च शिक्षा का उन्नयन और अनुसंधान हो सके और कुमायूं डिवीजन के छात्रों को भी इसका लाभ मिल सके। इसके साथ ही यह भी मांग करता हूं कि जो दूसरी अनुपूरक सूची के द्वारा विश्वविद्यालय विधेयक, 2008 प्रस्तुत किया गया है, उसे एचआरडी मिनिस्ट्री की जो हमारी स्टैंडिंग कमेटी है, वहां भेजा जाए और हमारी इस मांग को भी उसमें समाहित किया जाए। कुमायूं विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा देने के लिए विधेयक में संशोधन किया जाए।

MR. DEPUTY SPEAKER: Next is Shri M. Shivanna — not present

*...(व्यवधान)*

**उपाध्यक्ष महोदय:** मैं सभी को मौका दूंगा।

*...(व्यवधान)*

**श्री संतोष गंगवार** (बरेली): महोदय, मैं आपके माध्यम से बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। सागर से हमारे लोकसभा के वरिष्ठ सदस्य श्री वीरेन्द्र कुमार जी हैं। वे अपने क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को उठाते रहते हैं और समस्याओं के लिए लड़ाई भी लड़ते हैं।

दिनांक तीन तारीख को रेल विभाग में कुछ अतिक्रमण के ऊपर उन्होंने कार्रवाई करने का प्रयास किया। उन्होंने रेल अधिकारियों से बात की, सम्पर्क किया और यह कहा कि अगर यह अतिक्रमण है तो चार-पांच दिन बाद सबको जानकारी देकर, कई दुकानों का मामला था, कार्रवाई की जाये। दुर्भाग्य है कि रेल अधिकारियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया, इसलिए समस्या काफी गंभीर हो गयी। तब श्री वीरेन्द्र कुमार जी स्वयं पैदल चलकर उस स्थान पर गये। वहां जाने के बाद जब उन्होंने समस्या देखी, तो उन्हें लगा कि रेल विभाग एकतरफा कार्रवाई कर रहा है। उन्होंने उसे रोकने का काम किया, लेकिन वहां जो आरपीएफ के लोग थे, उन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। परिणाम यह हुआ कि वहां आरपीएफ के मौजूद टीआई श्री विवेक शर्मा ने अपने साथियों के साथ बहुत ही बुरे तरीके से वीरेन्द्र कुमार जी की पिटाई लगाई। श्री वीरेन्द्र कुमार आज यहां आये थे, लेकिन वे बोलने की स्थिति में नहीं हैं। वे कल सुबह भी यहां आये थे। हमने लोक सभा के माननीय अध्यक्ष जी को लिखकर दिया है कि यह बहुत ही गंभीर विषय है कि वे अपने क्षेत्र की समस्याओं के लिए लड़ाई लड़ रहे थे। हमारा आग्रह है कि उनके इस मसले को प्रिविलेज कमेटी को तत्काल भेजा जाये और जो संबंधित अधिकारी इसके लिए जिम्मेदार हैं, उनके खिलाफ तुरंत प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित कराई जाये।

**उपाध्यक्ष महोदय:** श्री राकेश सिंह, श्री गिरधारी लाल भार्गव और श्री पी.एस. गढ़वी भी इस विषय के साथ अपने को संबद्ध करते हैं।

**श्री राकेश सिंह** (जबलपुर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। देश में सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए, विशेष रूप से वाहनों की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्हीकल फैक्टरीज की स्थापना की गयी थी और ये व्हीकल फैक्टरीज आर्डिनैंस फैक्टरी बोर्ड की ही प्रोडक्शन यूनिट हैं। इन्हीं फैक्टरीज द्वारा देश में सेना को जोंगा, निशान और शक्तिमान जैसे वाहन पहले प्रदान किये गये। आधुनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए इन्हीं फैक्टरीज द्वारा अशोक लीलैंड और टाटा कम्पनियों से टैक्नोलॉजी ट्रांसफर द्वारा एलपीटीए और स्टेलियन जैसे वाहन हजारों